Class- BA(Hons.) Sanaskrit 4th SEM

Subject- Modern Sanskrit Literature

Topic- आधुनिक संस्कृत साहित्य का सामान्य सर्वेक्षण- भाग ‘क’

आधुनिक काल का संस्कृत साहित्य अत्यंत समृद्ध है । आधुनिक संस्कृत साहित्य को काल और विषय की दृष्टि से मुख्य रूप से दो भागों में विभक्त किया जा सकता है- स्वातन्त्रय पूर्व और स्वान्त्र्योत्तर । सन् 1947 ई. से पूर्व की रचनाओं में देशभक्ति, स्वतन्त्रता की आकांक्षा और उसके लिये संघर्ष के स्वर मुखर हुए हैं; भले ही वह गद्य हो पद्य हो या फिर नाटक हो । स्वतन्त्रता के बाद के साहित्य में आशा, उत्साह और आत्मसम्मान का भाव अधिक प्रखर होकर उभरा ।

आधुनिक संस्कृत साहित्य की श्रीवृद्धि में रचनाकारों के बहुमूल्य योगदान को जनसामान्य तक पहुँचाने में आधुनिक संस्कृत साहित्य के सुधी आचार्यों व समीक्षकों का योगदान और भी महत्त्वपूर्ण है । अतः आधुनिक संस्कृत साहित्य का सामन्य सर्वेक्षण हमें आधुनिक संस्कृत विद्वानों से परिचित कराता है ।

1. पण्डिता क्षमाराव- संस्कृत वाङ्मय में नारी रचनाकार के रूप में क्षमाराव का स्थान मूर्धन्य है एवं स्तुत्य है । इनका जन्म 1890 ई. में हुआ था और मृत्यु 1953 ई. हुई । इनके

पिता पंडित शंकर पांडुरंग संस्कृत के विद्वान थे । पंडिता क्षमाराव बाल्यकाल में ही अपने पिता की छत्रछाया से वंचित हो गई थी । पण्डिता क्षमाराव का सम्पूर्ण जीवन कठोर संघर्ष में व्यतीत हुआ है ।

महात्मा गांधी के व्यक्तित्व एवं चिंतन से काफी प्रभावित थी इसी प्रभाव के कारण इन्होंने **'सत्याग्रहगीता'**, **'उत्तरसत्याग्रहगीता'** और **'उत्तरजयसत्याग्रहगीता'** इस प्रकार तीन काव्य की रचना की । 1931 से 'गांधी इरविन समझौता' तक की घटनाओं का वर्णन प्रथम भाग **'सत्याग्रहगीता'** में है । 1931 से 1944 तक की घटनाओं का वर्णन द्वितीय भाग **'उत्तरसत्याग्रहगीता'** में तथा भारतीय स्वतंत्रता के स्वरूप का वर्णन तृतीय भाग **'उत्तरजयसत्याग्रहगीता'** में है ।

एक अन्य रचना **'शंकरजीवनआख्यानाम्'** जो कि 17 उल्लास में है यह 1939 में मुंबई से प्रकाशित हुई जिसमें अपने पिता शंकर पांडुरंग के जीवन चरित्र पर इन्होंने प्रकाश डाला है । पंडिता क्षमाराव की अन्य रचनाओं में से **'तुकारामचरित'**, **'श्रीरामचरित'** तथा **'श्रीज्ञानेश्वरचरितम्'** महाकाव्य है । यह तीनों ही रचनाएं महाराष्ट्र के 3 महान संतों के जीवन पर आधारित है ।

काव्य में उत्तम काव्य **'मीरालहरी'** नामक एक काव्य है जिसमें उन्होंने मीरा की कष्ट गाथा का वर्णन किया है । इस काव्य के माध्यम से यह ज्ञात होता है मानो पंडिता क्षमाराव

ने स्वयं मीरा से एकाकार होकर यह काव्य लिखा हो। इसमें मीरा की कष्ट गाथा के चित्रण से अपने निजी जीवन की व्यथा अंतर्निहित की है।

मुंबई से 1933 ईस्वी में प्रकाशित अनुष्टुप छंद में निबद्ध **'कथापञ्चकम्'** में संकलित इनकी कहानियां संस्कृत की नई कथा का प्राणवान् रूप प्रस्तुत करती हैं। पंडित क्षमाराव की भाषा प्रसादमयी है। इनकी गद्यकथाओं में तत्कालीन परिस्थितियों और सामाजिक रूढ़ियों से त्रस्त नारी तथा शोषित वर्ग की दुर्दशा चित्रित की गई है।

अधिकांशतः दुखांत कहानियां है, कुछ कथाएं राष्ट्रीय आंदोलनों से संबद्ध है। पंडित क्षमाराव की दो लघु पद्यात्मक रचनाएं **'शंकरजीवनाख्यानाम्'** और **'विचित्रपरिषद्यात्रा'**। प्रथम में अपने पिता की जीवनी प्रस्तुत की है तो दूसरे में अनंतशयन की यात्रा का संस्मरण किया है।

पंडिता क्षमाराव के साहित्य में चित्रित सामाजिक संबंध ना केवल प्रासंगिक है बल्कि आज भी जीवित हैं। पंडिता क्षमाराव के स्त्री पात्र अपने सौंदर्य और तप-दोनों से ही सराहनीय हैं। क्षमाराव एक और तो नारी की अस्मिता को रेखांकित करती हैं तो दूसरी और अमर्यादित आचरण को त्याज्य भी बताती हैं।

अतः कहा जा सकता है कि पण्डिता क्षमाराव आधुनिक युग में अपने वर्णन कौशल, अपनी अभिव्यक्ति शैली और अपनी विचार दृष्टि से आधुनिक समाज के प्रति, स्त्री के प्रति, देश के प्रति और राष्ट्र के प्रति प्रेरणा प्रदान करती हैं।

2. श्री जानकी वल्लभ शास्त्री- आधुनिक कवि श्री जानकी वल्लभ शास्त्री का जन्म बिहार के गया जिले के मैगरा नामक ग्राम में 1916 ई. में हुआ था । इनके पिता का नाम पंडित रामानुग्रह शर्मा था । इन्होंने अपनी परीक्षायें उत्तम श्रेणी में उत्तीर्ण करते हुये 18 वर्ष की आयु में साहित्याचार्य की उपाधि प्राप्त की ।

हिंदी साहित्य में छायावादी कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं । शास्त्री जी ने 16 वर्ष की आयु में संस्कृत मुक्तकों की रचना की जिनका संकलन **'काकली'** नाम से 1935 ईस्वी में प्रकाशित हुआ । स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि पर रचित **'बंदीमंदिरम्'** इनके द्वारा रचित खंडकाव्य है ।

जानकी वल्लभ शास्त्री ने आधुनिक संस्कृत काव्य में नए युग का सूत्रपात किया है । इन्होंने गीत, स्त्रोत, गजल, श्लोक आदि अनेक शैलियों में संस्कृत में रचनाएँ की हैं । साथ ही संस्कृत में कहानियाँ, उपन्यास, नाटक, व्यंग्य और आलोचनाएँ भी लिखी हैं ।

उन्होंने प्राचीन काव्य धारा को आज के साहित्य की नई चेतना से जोड़ा है । उनके गीतों में अनुप्रास का निर्वाह पदावली की कोमलता, सप्राणता, रागात्मकता और वैयक्तिक करुणा कूट-कूट कर भरी है । संस्कृत कविता में रोमांटिक प्रवृत्ति के पुरोधा कहे जा सकते हैं । आज के संस्कृत कविता को उन्होंने अपनी प्रयोगशीलता के द्वारा नए आयाम दिए ।

‘गीतगोविंद’ जैसी कोमलकान्त पदावली में आज की संवेदनाओं को इन्होंने स्पष्ट किया है । इनके काव्यों में हिंदी के छायावादी काव्य की छटा भी है । इनकी रचनाओं में आधुनिक बोध के साथ-साथ प्राचीन परंपरा का निर्वाह देखने को मिलता है ।

3. आचार्य बच्चू लाल अवस्थी- आधुनिक कवि बच्चू लाल अवस्थी का जन्म 8 अगस्त 1918 ईस्वी में उत्तर प्रदेश के बहराइच जनपद के फरुहाघाट ग्राम में हुआ था । इनके पिता का नाम पंडित बद्रीनाथ अवस्थी था । इन्होंने प्रारंभिक शिक्षा उर्दू भाषा में प्राप्त की तत्पश्चात् 1933 ईस्वी में बसंत पंचमी के दिन संस्कृत का अध्ययन प्रारंभ किया ।

लखनऊ विश्वविद्यालय से दर्शन शास्त्र एवं साहित्य में आचार्य परिक्षा उत्तीर्ण की । आगरा विश्वविद्यालय से संस्कृत और हिंदी में एम.ए. किया इन्होंने 1963 ई. में पीएचडी की । अंत में 1975 ईस्वी में सागर विश्वविद्यालय से डि.लीट्. । उत्तर प्रदेश के विभिन्न महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य किया तथा विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग में कार्य करते हुये सेवानिवृत्त हुए ।

अवस्थी जी संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, ब्रजभाषा, फारसी भाषा के ममर्ज्ञ थे । इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- भारतीयदर्शनेषु कर्मवादः, नेतृस्तवः, कालिदासस्य जगाम भारती, शुकवृत्तम्, देवदूतम् इत्यादि । इन्होंने संस्कृत में स्तोत्र काव्य, वर्णनात्मक, खंडकाव्य, गजल आदि विधाओं में भी लिखा है ।

अवस्थी जी की 'एकदन्तवृत्तम्' कविता में मतवाले हाथी को प्रतीक बनाकर समृद्ध व्यक्तियों की प्रवृत्तियों का भंडाफोड़ किया है। कवि का आशय है कि एक तरफ वे लोग हैं जो समाज की भलाई के लिए घर छोड़कर गुफाओं में चिंतन करते हैं दूसरी ओर वे संपन्न व्यक्ति हैं जिनकी दृष्टि में सामाजिक व्यक्ति हीन एवं उपेक्षित होते हैं।

वर्तमान समय के तनाव और संशय की स्थिति कवि को परंपरा से हटकर नई विधा की ओर ले गई है। बच्चू लाल अवस्थी की सभी रचनाएँ और ग़ज़ल भावपूर्ण, चिंतनीय एवं विचारणीय हैं जो कि आधुनिक समाज को एक नई दृष्टि देते हैं।

Rekha Kumari

Department of Sanskrit